उत्तम मार्दव धर्म पूजा

(पद्धड़ी छन्द)

मार्दव वृष भाव विचार सोइ, जहां मान भाव दीखे न कोइ ।
इस धारी मुनि शिवगामि जानि, मैं जजौं थापि मार्दव सुभानि ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकम्

(मणुयणानंद की चाल)

क्षीर सम नीर शुद्ध गाल करि लाइये ।
पात्र सुवरण विषैं धारि गुण गाइये ।।
जगत फिरनो मिटे तासु फल तैं सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय जलं ।

स्वच्छ नीर संग चन्दनादि को मिलायजी ।
शुद्ध गंध युक्त भक्ति भावतैं चढ़ायजी ।
जगत आताप हर जानि ता फल सही ।
धरम मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय चन्दनं ।

अक्षतं समुज्वलं खंड विन जानिये ।
सुभग मोती जिसे थाल भरि आनिये ।।

ध्रौव्य फल दाय मन लाय ध्याऊं सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय अक्षतान् ।

फूल कल्पवृक्षके गंध रंग सारजी ।
माल गूंथि शुद्ध भाव भक्ति कर धारजी ।
मदन मद हरन सुफल जानि यातैं सही ।
घरम मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय पुष्पं ।

सुभग सर शुद्ध नैवेद्य मन लाइये ।
मोदकादि शुद्ध भक्ति भावतें चढ़ाइये ।।
धारि स्वर्णपात्र शुद्ध मन बचन तन सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय नैवेद्यं ।

दीप रतनन मयी नाश तमको करा ।
कनक पातर विषैं भक्तिभाव तैं धरा ।
नाश अज्ञान ह्वै तासु फल तैं सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय दीपं ।

धूप दश गंध शुभ लेइ मन मानिये ।
अगर चंदन सबै मेलि शुभ ठानिये ।।
अग्नि संग खेइये कर्म जालन सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय धूपं ।

श्रीफलादि लौंग पुंगीफलादि जानिये ।
शुद्ध बादाम खारक भले आनिये ।।
सिद्ध थानक लहै तासु फलतैं सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय फलं ।

नीर चन्दन अखित पुष्प चरु दीप जी ।
धूप फल अर्घ कर भाव शुद्ध टीप जी ।।
लोक में फिरन, तन धरन मिटि है सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगायार्घं ।

अथ प्रत्येकार्घ्याणि

(चाल--मणुयणानंद की)

देव वीतराग सर्वज्ञ तारक सही ।
दोष अष्टादशों तासु माहीं नहीं ।।
नमत तिन पद करै धर्म मार्दव कह्यो ।
सो जजौं चारि गति माहिं भरमन दह्यो ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

वीतराग देव कही वानी सो धर्म है ।
ता सुनै जीव निज हरै भाव मर्म है ।।
मन वचन काय श्रुतपाद सिरनाय है ।
सो जजों धर्म मार्दव सु शिवदाय है ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री जिनधर्मपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

धर्म को सेय तप लेय कर्म जार जी ।
भये सिद्धदेव तन रहित सुखकार जी ।।
लेय इन नाम मन वचन शिर नाय है ।
सो जजौं धर्म मार्दव सु शिवदाय है ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

धारि छत्तीस गुण सूरि सुखदाय जी ।
धर्म तप भावसों गुप्ति धरि भाय जी ।।
मान तजि नमन इन पद विषै लाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

धारि गुण पांच अरु वीस उवझाय जी ।
और भी अनेक गुण पास तिन थाय जी ।।
मान तजि इन चरण कायको नायवो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइवो ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

क्षेत्र अतिशय तहाँ धर्म को धाय है ।
नमन बहु जिय करें देव गुण गाय है ।।
मान तजि क्षेत्र शुभ जानि शिर नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्रपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

देव जिनकी सु प्रतिमा अकृत्रिम इसी ।
रूप द्युति ध्यान मुद्रा कही जिन जिसी ।।
मान तजि शीश इन चरण को सु नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिमजिनचैत्यपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरग थानक विषैं देव जिनके सही ।
रतनमय जैन बिम्ब विगर किये हैं यही ।।
मान तजि शीश इन चरण को सु नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री ऊर्द्धलोकसम्बन्धीजिनचैत्यपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

ज्योतिषी व्यंतरा थान मध्यलोक जी ।
विन किये चैत्य जिन कहे अघ रोक जी ।।
मान तजि शीश इन चरण को सु नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री मध्यलोकसम्बन्धीजिनचैत्यपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

भवन देवनि विषैं बहुत जिनराय जी ।
बिम्ब अकृत्रिम कहे सेय तसु पाय जी ।।
मान तजि शीश इन चरण को सु नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री अधोलोकसम्बन्धीजिनचैत्यपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

आदि इन पूज्य थानक बहुत है सही ।
सिद्धक्षेत्र मोक्ष फलदायक तीरथ मही ।।
मान तजि शीश इन चरण को सु नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।११।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्रपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

जयमाला

(वेसरी छन्द)

मार्दव धर्म मान को खोवै, ता फल जगत पूज्य पद होवै ।
मार्दव सकल दोष निरवारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।१।।

मार्दव धरम इन्द्र सुर पूजैं, मार्दव धरम भजैं अघ धूजैं ।
मार्दव मान हरै सुख कारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।२।।

मार्दव धरम महानर ध्यावै, मार्दव धरम मानि नहिं पावै ।
यह मार्दव वृष शिव थल धारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।३।।

मार्दव सब को राखै माना, मार्दव सब धरमनि में दाना ।
मार्दव धरम जीव जे धारैं, ता फल आप तरै अनि तारैं ।।४।।

मार्दव धरम सुरग सुख केरा, उपद्रव नाशि हरै भव फेरा ।
मार्दव उत्तम पुरुष सु धारैं, ता फल आप तरै अनि तारै ।।५।।

मार्दव मोक्षमार्ग को दाता, मार्दव धर्म सकल जग त्राता ।
मार्दव वृष गुणवंता धारैं, ता फल आप तरै अनि तारैं ।।६।।

मार्दव धरम कलपतरु भाई, मार्दव मनवांछित फलदाई ।
मार्दव धरम मुकुट जो धारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।७।।

मार्दव धरम कनकमें मीना, मार्दव धारि सकैं न कमीना ।
मान मार मार्दव वृष धारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।८।।
मार्दव वृष सब धर्म प्रधाना, मार्दव मोह मल्लको हाना ।
मार्दव माल पुरुष उर धारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।९।।

(दोहा)

मान मार मार्दव करै, हरै पाप मल सोय ।
जगत छुड़ावै शिव करै, ते मो रक्षक होय ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

❀

दशलक्षण धर्म पूजन

(पं. द्यानतरायजी कृत)

(अनुष्टुप) स्थापना (संस्कृत)

उत्तमक्षान्तिकाद्यन्त-ब्रह्मचर्य-सुलक्षणम् ।
स्थापय दशधा धर्ममुत्तमं जिनभाषितम् ।।

(अडिल्ल) स्थापना (हिन्दी)

उत्तम क्षमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं,
चहुँगति-दुखतैं काढ़ि मुकति करतार हैं।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(सोरठा)

हेमाचल की धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा ।

अमल अखण्डित सार, तन्दुल चन्द्र समान शुभ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा ।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोकलों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा ।

नेवज विविध निहार, उत्तम षट्-रस-संजुगत।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा ।

बाति कपूर सुधार, दीपक-ज्योति सुहावनी।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

फल की जाति अपार, घ्रान-नयन-मन-मोहने।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

आठों दरब सँवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसौं।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अंग-अर्घ्य

(सोरठा)

पीड़ैं दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करैं।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा।।
उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह-भव जस, पर भव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहै अयानो।।
कहि है अयानो वस्तु छीनै, बाँध मार बहुविधि करै।
घर तैं निकारै तन विदारै, वैर जो न तहाँ धरै।।
ते करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अति क्रोध-अगनि बुझाय प्रानी, साम्य-जल ले सीयरा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।।
उत्तम मार्दव गुन मन-माना, मान करन को कौन ठिकाना।
बस्यो निगोद माहिं तैं आया, दमरी रूँकन भाग बिकाया।।

रूँकन बिकाया भाग वशतैं, देव इक-इन्द्री भया।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीड़ों में गया।।
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावै उदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना बसै।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु-सम्पदा।।
उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मन में होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये।।
करिये सरल तिहुँ जोग अपने देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अँगार-सी।।
नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, करम-बन्ध विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-आर्जवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देह सों।
शौच सदा निर्दोष, धरम बड़ो संसार में।।
उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी।।
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतैं।।
ऊपर अमल मल भर्यो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधू लहै।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज।
साँच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।।
उत्तम सत्य-बरत पालीजै, पर-विश्वासघात नहिं कीजै।
साँचे-झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।।
पेखो तिहायत पुरुष साँचे को दरब सब दीजिये।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, साँच गुण लख लीजिये।।

ऊँचे सिंहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया।
वच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रिय मन वश करो।
संजम-रतन सँभाल, विषय-चोर बहु फिरत हैं।।
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजैं अघ तेरे।
सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं, आलस-हरन करन सुख ठाँ हीं।।
ठाहीं पृथीवी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो।।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग-कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जम-मुख बीच में।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप चाहैं सुरराय, करम-शिखर को वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकतिसम।।
उत्तम तप सब माहिं बखाना, करम-शैल को वज्र-समाना।
बस्यो अनादि निगोद मँझारा, भू विकलत्रय पशु तन धारा।।
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता।।
अति महा दुरलभ त्याग विषय-कषाय जो तप आदरैं।
नर-भव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरैं।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार संघ को दीजिए।
धन बिजुली उनहार, नर-भव लाहो लीजिए।।
उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान सँभारै।।
दोनों सँभारै कूप-जल सम, दरब घर में परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया।।

धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए।।
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिन्ता दुख ही मानो।
फाँस तनक-सी तन में सालै, चाह लँगोटी की दुख भालै।।
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरैं।
धनि नगन पर तन-नगन ठाड़े, सुर-असुर पायनि परैं।।
घर माहिं तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसार सौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा।।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहैं बान-वरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे।।
कूरे तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसान माहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं।।
संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दश पैड़ि चढ़ि कै, शिव-महल में पग धरा।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

दश लच्छन वन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय।।

(चौपाई)

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर-बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासे, नाना भेद ज्ञान सब भासे।।
उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुरगति त्यागि सुगति उपजावे।
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, सन्तोषी गुण-रतन भण्डारी।।
उत्तम सत्य-वचन मुख बोले, सो प्रानी संसार न डोले।
उत्तम संजम पाले ज्ञाता, नर-भव सफल करै, ले साता।।
उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करम-शत्रु को टाले।
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई।।
उत्तम आकिंचन व्रत धारे, परम समाधि दशा विसतारे।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावे, नर-सुर सहित मुकति-फल पावे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

करै करम की निरजरा, भव पींजरा विनाशि।
अजर अमर पद को लहैं, 'द्यानत' सुख की राशि।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।
कर ऊपर कर सुभग विराजै, आसन थिर ठहराया है।।टेक.।।
जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है।
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा दृष्टि सुहाया है।।१।।
कंचन वरन चले मन रंच न सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है।
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नशाया है।।२।।
शुध-उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है।
श्यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुआँ उड़ाया है।।३।।
जीवन-मरन अलाभ-लाभ जिन सबको नाश बताया है।
सुर नर नाग नमहिं पद जाके ''दौल'' तास जस गाया है।।४।।